ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 1. 08 .2020

पाठ नाम - भारतेन्दु युग की विशेषता

भारतेंदु युग ने हिंदी कविता को रीतिकाल के शृंगारपूर्ण और राज-आश्रय के वातावरण से निकाल कर राष्ट्रप्रेम , समाज-सुधार आदि की स्वस्थ भावनाओं से ओत-प्रेत कर उसे सामान्य जन से जोड़ दिया।इस युग की काव्य प्रवृत्तियाँ निम्नानुसार हैं:-

1. देशप्रेम की व्यंजना :अंग्रेजों के दमन चक्र के आतंक में इस युग के कवि पहले तो विदेशी शासन का गुणगान करते नजर आते हैं-

किंतु शीघ्र ही यह प्रवृत्ति जाती रही।मननशील कवि समाज राष्ट्र की वास्तविक पुकार को शीघ्र ही समझ गया और उसने स्वदेश प्रेम के गीत गाने प्रारम्भ कर दिए-

बहुत दिन बीते राम, प्रभु खोयो अपनो देस।

खोवत है अब बैठ के, भाषा भोजन भेष ॥

(बालमुकुन्द गुप्त)

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार ,ईश्वर से स्वतंत्रता की प्रार्थना आदि रूपों में भी यह भावना व्यक्त हुई।इस युग की राष्ट्रीयता सांस्कृतिक राष्ट्रीयता है, जिसमें हिंदू राष्ट्रीयता का स्वर प्रधान है।

देश-प्रेम की भावना के कारण इन कवियों ने एक ओर तो अपने देश की अवनति का वर्णन करके आंसू बहाए तो दूसरी ओर अंग्रेज सरकार की आलोचना करके देशवासियों के मन में स्वराज्य की भावना जगाई। इसी प्रकार जब काबुल पर अंग्रेजों की विजय होने पर भारत में दिवाली मनाई गई तो भारतेंदु ने उसका विरोध करते हुए लिखा -

सुजस मिलै अंग्रेज को, होय रूस की रोक।

बढ़ै ब्रिटिश वाणिज्य पै, हमको केवल सोक॥

2. सामाजिक चेतना और जन-काव्य : समाज-सुधार इस युग की कविता का प्रमुख स्वर रहा।इन्होंने किसी राजा या आश्रयदाता को संतुष्ट करने के लिए काव्य-रचना नहीं की , बल्कि अपने हृदय की प्रेरणा से जनता तक अपनी भावना पहुंचाने के लिए काव्य रचना की।ये कवि पराधीन भारत को जगाना चाहते थे , इसलिए समाज-सुधार के विभिन्न मुद्दों जैसे स्त्री-शिक्षा ,विधवा-विवाह,विदेश-यात्रा का प्रचार , समाज का आर्थिक उत्थान और समाज में एक दूसरे की सहायता आदि को मुखरित किया; यथा -

निज धर्म भली विधि जानैं, निज गौरव को पहिचानैं।

स्त्री-गण को विद्या देवैं, करि पतिव्रता यज्ञ लेवैं ॥

(प्रताप नारायण मिश्र)

3. **भक्ति-भावना** : इस युग के कवियों में भी भक्ति-भावना दिखाई पड़ती है ,लेकिन इनकी भक्ति-भावना का लक्ष्य अवश्य बदल गया।अब वे मुक्ति के लिए नहीं, अपितु देश-कल्याण के लिए भक्ति करते दिखाई देते हैं -

कहाँ करुणानिधि केशव सोए।

जगत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए।

(भारतेंदु हरिश्चंद्र)

4. **प्राचीनता और नवीनता का समन्वय:** इन कवियों ने एक ओर तो हिंदी-काव्य की पुरानी परम्परा के सुंदर रूप को अपनाया , तो दूसरी ओर नयी परम्परा की स्थापना की। इन कवियों के लिए प्राचीनता वंदनीय थी तो नवीनता अभिनंदनीय।अत: ये प्राचीनता और नवीनता का समन्वय अपनी रचनाओं में करते रहे।भारतेंदु अपनी "प्रबोधिनी" शीर्षक कविता में "प्रभाती" के रूप में प्राचीन परिपाटी के अनुसार कृष्ण को जगाते हैं और नवीनता का अभिनंदन करते हुए उसमें राष्ट्रीयता का समन्वय करके कहते हैं :-

5. **निज भाषा प्रेम** : इस काल के कवियों ने अंग्रेजों के प्रति विद्रोह के रूप में हिंदी-प्रचार को विशेष महत्त्व दिया और कहा -

निज-भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल (भारतेंदु)

यद्यपि इस काल का अधिकतर साहित्य ब्रजभाषा में ही है , किंतु इन कवियों ने ब्रजभाषा को भी सरल और सुव्यवस्थित बनाने का प्रयास किया।खड़ी बोली में भी कुछ रचनाएँ की गई, किंतु वे कथात्मकता और रुक्षता से युक्त हैं।

6. **श्रृंगार और सौंदर्य वर्णन** : इस युग के कवियों ने सौंदर्य और प्रेम का वर्णन भी किया है ,किंतु उसमें कहीं भी कामुकता और वासना का रंग दिखाई नहीं पड़ता।इनके प्रेम-वर्णन में सर्वत्र स्वच्छता एवं गंभीरता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के काव्य से एक उदाहरण दृष्टव्य है:-

हम कौन उपाय करै इनको हरिचन्द महा हठ ठानती हैं।

पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँकियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं॥

7. **हास्य-व्यंग्य:** भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं उनके सहयोगी कवियों ने हास्य-व्यंग्य की प्रवृत्ति भी मिलती है। उन्होंने अपने समय की विभिन्न बुराइयों पर व्यंग्य-बाण छोड़े हैं। भारतेंदु की कविता से दो उदाहरण प्रस्तुत हैं:-

इनकी उनकी खिदमत करो,रुपया देते-देते मरो ।

8. **प्रकृति-चित्रण** : इस युग के कवियों ने पूर्ववर्ती युगों की अपेक्षा प्रकृति के स्वतंत्र रुपों का विशेष चित्रण किया है। भारतेंदु के "गंगा-वर्णन" और "यमुना-वर्णन" इसके निदर्शन हैं। ठाकुर जगमोहन सिंह के स्वतंत्र प्रकृति के वर्णन भी उत्कृष्ट बन पड़े हैं। प्रकृति के उद्दीपन रूपों का वर्णन भी इस काल की प्रवृत्ति के रूप जीवित रहा।

9. **रस** : इस काल में शृंगार , वीर और करुण रसों की अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति प्रबल रही, किंतु इस काल का शृंगार रीतिकाल के शृंगार जैसा नग्न शृंगार न होकर परिष्कृत रुचि का शृंगार है।देश की दयनीय दशा के चित्रण में करुण रस प्रधान रहा है।

10. **भाषा और काव्य-रूप** : इन कवियों ने कविता में प्राय: सरल ब्रजभाषा तथा मुक्तक शैली का ही प्रयोग अधिक किया।ये कवि पद्य तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि गद्यकार भी बने। इन्होंने अपनी कलम निबंध , उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में भी चलाई। इस काल के कवि मंडल में कवि न केवल कवि था बल्कि वह संपादक और पत्रकार भी था।

इस प्रकार भारतेंदु-युग साहित्य के नव जागरण का युग था , जिसमें शताब्दियों से सोये हुए भारत ने अपनी आँखें खोली और कविता को राजमहलों से निकालकर जनता से उसका नाता जोड़ा।उसे कृत्रिमता से मुक्त कर स्वाभाविक बनाया ,श्रृंगार को परिमार्जित रूप प्रदान किया और कविता के पथ को प्रशस्त किया।भारतेंदु और उनके सहयोगी लेखकों के साहित्य में जिन नये विषयों का समावेश हुआ ,उसने आधुनिक काल की प्रवृत्तियों को जन्म दिया। इस प्रकार भारतेंदु युग आधुनिक युग का प्रवेश द्वार सिद्ध होता है।

भारतेन्दु युग के कवि :-

भारतेन्दु हरिश्चंद्र -

भारतेन्द्र हरिश्चन्द्रजन्म **आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह**कहे जाते हैं। भारतेन्दु हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। जिस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का अविर्भाव हुआ, देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेज़ी शासन में अंग्रेज़ी चरमोत्कर्ष पर थी। शासन तंत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण कार्य अंग्रेज़ी में ही होता था। अंग्रेज़ी हुकूमत में पद लोलुपता की भावना प्रबल थी। भारतीय लोगों में विदेशी सभ्यता के प्रति आकर्षण था। ब्रिटिश आधिपत्य में लोग अंग्रेज़ी पढ़ना और समझना गौरव की बात समझते थे। हिन्दी के प्रति लोगों में आकर्षण कम था, क्योंकि अंग्रेज़ी की नीति से हमारे साहित्य पर बुरा असर पड़ रहा था। हम गुलामी का जीवन जीने के लिए मजबूर किये गये थे। हमारी संस्कृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा था। ऐसे वातावरण में जब बाबू हरिश्चन्द्र अवतारित हुए तो उन्होंने सर्वप्रथम समाज और देश की दशा पर विचार किया और फिर अपनी लेखनी के माध्यम से विदेशी हुकूमत का पर्दाफ़ाश किया।भारतेन्दु जी ने अपनी प्रतिभा के बल पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। हिन्दी गद्य साहित्य को इन्होंने विशेष समृद्धि प्रदान की है। इन्होंने दोहा, चौपाई, छन्द, बरवै, हरिगीतिका, कवित्त एवं सवैया आदि पर काम किया। इन्होंने न केवल कहानी और कविता के क्षेत्र में कार्य किया अपितु नाटक के क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र	
पूरा नाम	बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्र
जन्म	9 सितम्बर सन् 1850
जन्मभूमि	वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मृत्यु	6 जनवरी, सन् 1885
मृत्युस्थान	वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मुख्य रचनाएँ	'प्रेममालिका' (1871), 'प्रेम माधुरी' (1875), 'प्रेम-तरंग' (1877), 'अंधेर नगरी', 'भारत दुर्दशा', 'कृष्णचरित्र'।

बालमुकुन्द गुप्त-

जन्म : 14 नवंबर 1865, गुरयानी, रोहतक, हरियाणा

भाषा : हिंदी

विधाएँ : निबंध, कविता

मुख्य रचना -शिवशंभु के चिट्ठे, उर्दू बीबी के नाम चिट्ठी, हरिदास, खिलौना, खेलतमाशा, स्फुट कविता, बालमुकुंद गुप्त निबंधावली

संपादन : अखबारे चुनार, कोहेनूर (दोनों उर्दू अखबार), भारत प्रताप (उर्दू मासिक), भारतमित्र, बंगवासी

अनुवाद : मडेल भगिनी (बाँग्ला उपन्यास), रत्नावली (हर्षकृत नाटिका)

निधन : 18 सितंबर 1907

बाबू बालमुकुन्द गुप्त भारतेंदु युग और द्विवेदी युग को जोड़ने वाली कड़ी हैं. इनके निबंधों में यदि एक ओर भारतेंदु युग का राष्ट्र-प्रेम, जन जागरण और सामाजिक नव निर्माण की लालसा मुखरित हुई है तो दूसरी ओर द्विवेदी युगीन भाषा सौष्ठव भी विद्यमान है| इस प्रकार भारतेंदु युगीन आत्मा और द्विवेदी युगीन कलेवर को धारण कर इनके निबंध पार्दुभूर्त हुए हैं. इनकी प्रतिभा बहुमुखी थी| ये हिंदी के प्रमुख निबंधकार, पत्रकार, आलोचक तथा कवि थे| हिंदी गद्य में इनका गौरवशाली स्थान है| गुप्तजी एक सफल संपादक और पत्रकार के साथ साथ उत्कृष्ट निबंध लेखक भी थे और बालमुकुन्द निबंधावली तथा शिवशम्भू का चिटठा इनके निबंध संग्रह ही हैं| गुप्तजी ने राजनैतिक या सामाजिक समस्याओं पर निबंध लिखा हैं पर विचारात्मक और वर्णात्मक निबंधों की अपेक्षा भावात्मक और कथात्मक निबंधों की संख्या ही अधिक है| 'शिवशम्भू का चिटठा' के निबंध कथात्मक ही हैं और उन पर गुप्त जी की भावात्मकता की भी अनूठी छाप है| इनके विचारों में गंभीरता, दुरूहता और उलझन की अपेक्षा भावावेग की अधिक मात्र है तथा हास-परिहास व् व्यंग्य विनोद का भी प्रसंगानुकूल समावेश है| इसी प्रकार इन्होने तत्कालीन भाषा शैली और साहित्यिक कृतियों के सम्बन्ध में साहित्यिक निबंध भी लिखे हैं तथा अंग्रेजी शासन की व्यंग्यात्मक आलोचना भी की है| इन्होने आत्माराम नाम से भी आलोचनाएँ प्रस्तुत की हैं और इनके विचारों का जनता में अच्छा स्वागत हुआ है|

भाषा शैली

गुप्तजी एक नूतन भाषा शैली के प्रवर्तक थे और इनकी भाषा सर्वथा व्याकरणनुमोदित रही है| भारतेंदु युग में जो भाषा की अव्यवस्था, अनेकरूपता, अव्यावहारिकता व शिथिलता दीख पड़ती है और विराम चिन्हों का अशुद्ध प्रयोग मिलता है उन सबसे गुप्तजी की भाषा बिलकुल अछूती है| चूंकि वह उर्दू से हिंदी में दीख पड़ती है और इनकी भाषा में जाफरानी, मौल, ख्याली, तरक्की, करम, अमल, लिबास दिल्लगी, कलम, फरियाद, तबियत, तुल-अरज, आवाज आदि उर्दू, फ़ारसी शब्दों के साथ साथ अभ्रस्पर्शी, अनंत, नवजात आदि संस्कृत के तत्सम शब्द भी दृष्टिगोचर होते हैं| इन्होने मुहावरों का भी सफल प्रयोग किया है और भाषा में प्रवाह इनका प्रधान लक्ष्य था|

गुप्तजी की शैली में सामान्यतः तीन रूप दिख पड़ते हैं -

- आलोचनात्मक शैली

- व्यंग्यात्मक शैली

- परिचयात्मक शैली

कृतियाँ

गुप्त जी के मौलिक ग्रंथों में स्फुट कविता, शिव शम्भू का चिटठा, हिंदी भाषा, चिट्ठे और ख़त, खिलौना, खेल तथा तमाशा तथा सर्पाघात चिकित्सा का उल्लेखनीय स्थान है| इनके निबंधों का एक संग्रह 'बालमुकुन्द गुप्त निबंधावली' नाम से प्रकाशित भी हो चुका है| इसके अतिरिक्त माडेल-भागिनी, हरिदास, रत्नावली नाटिका आदि इनकी अनूदित कृतियाँ हैं|

बाबू बालमुकुन्द गुप्त जी का हिंदी गद्य के उन्नायकों में एक विशिष्ट स्थान है| हिंदी साहित्य में भारतेंदु जी के अस्त होने और महावीर प्रसाद द्विवेदी के उदय होने के मध्य की संक्रमण बेला में ये शुक्र तारे की भाँती चमके और सर्वत्र अपना आलोक विकीर्ण किया| हिंदी के साहित्यिक इतिहास में गुप्त जी सदा स्मरणीय रहेंगे| हिंदी को प्रवाहमयी और सर्वरूप बनाने की दिशा में इनके योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं|

NAME-PRITI TIWARI